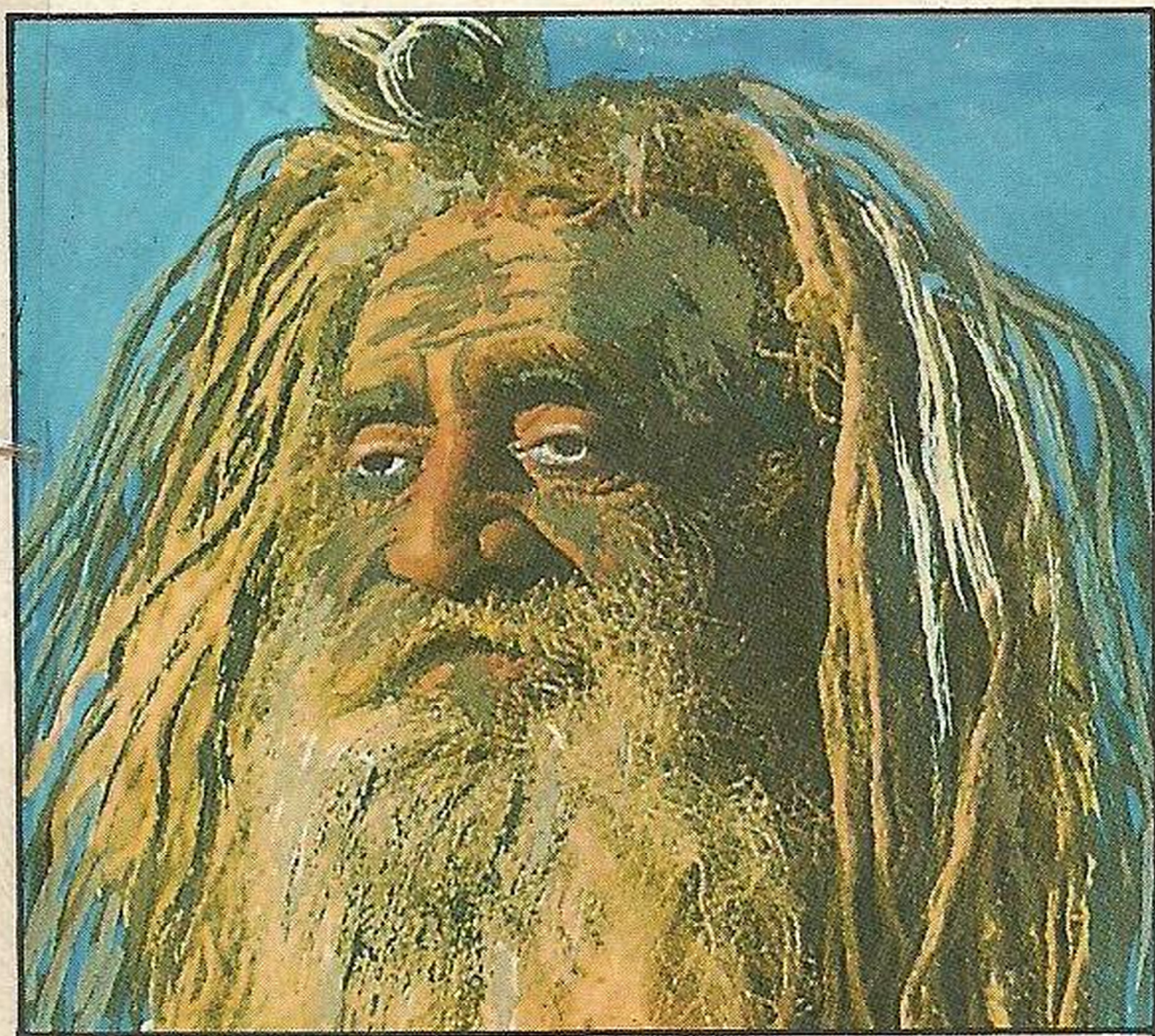


डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

तांत्रिक त्रिजटा अघोरी



अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

रहस्य रोमांच

जीवन को झकझोर कर रख देने वाली

पुस्तक श्रृंखला



एस-सीरिज

में उपलब्ध है

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

तांत्रिक त्रिजटा अधोरी सिद्धाश्रम

रोमांचक व्यक्तित्व, वर्णन

भुवनेश्वरी साधना

आकस्मिक धन प्राप्ति साधना

अप्सरा साधना सिद्धि

प्रामाणिक विवरण व साधनाएं

इस धरा पर देव लोक!

में बाहें फैलाए खड़ा हूँ

पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान

हंसा! उड़हूँ गगन की ओर

आध्यात्मिक अपूर्व पुस्तक

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

टेली- ०२६१-३२२०६

त्रिजटा अधोरी

गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१

फोन: ०२६१-३२२०६

© प्रकाशकाधीन

- प्रकाशक :** मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१
फोन: ०२६१-३२२०६
- संस्करण :** १९९३
- मूल्य :** ५.०० (पांच रुपये)
- मुद्रक :** नव शक्ति इन्डस्ट्रीज,
C. १३, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़, दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

प्राक्कथन

आज जबकि निरंतर बढ़ती जा रही विषमताओं में, पुनः आध्यात्मिकता की छांव ढूँढी जा रही है, फिर से भारतीय परम्पराओं की बात कही-सुनी जाने लगी है, भारतीय विद्याओं की पुनर्व्याख्या और समीचीनता अनुभव की जा रही है, भौतिकता में छुपी रिक्तता अनुभव की जा रही है - व्यक्ति के समक्ष कोई स्पष्ट मार्ग नहीं है, जो उन्हें पूर्ण तृप्ति दे सके। कहने को तो बहुत से मत हैं, बहुत सी पद्धतियाँ हैं, लेकिन ऐसा कोई भी नहीं जो उसे अपनी सुगन्ध से आप्लावित कर दे...

ऐसी घटाटोप स्थिति में एक नाम स्वतः ही उभर कर समक्ष आता है -- “**पूज्यपाद सद्गुरु गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी**” का - एक ऐसा दैवी व्यक्तित्व, जिनके पास जाते ही मन की सारी समस्यायें और मन का सारा तनाव, स्वतः समाप्त होने की क्रिया में आ जाता है, और इस तथ्य के साक्षीभूत हैं, उनके सैकड़ों-हजारों वे शिष्य, जो उनका घनिष्ठ साहचर्य प्राप्त कर चुके हैं।

एक श्रेष्ठ ज्योतिषी के रूप में, एक प्रख्यात ज्योतिर्विद् के रूप में वे सम्पूर्ण देश की सीमाओं से बाहर भी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में विख्यात रहे हैं, लेकिन उनके विराट व्यक्तित्व का तो यह केवल एक पहलू भर है। वास्तव में तो

वे इस विसंगति से भरे नैराश्य और घुटन की पीड़ा के अन्धकार में, एक ज्योतिर्विद् से भी अधिक, एक ज्योतिपुंज के समान हैं, जिनके दैदीप्यमान मुख-मंडल पर सदैव ही आलोकित रहती है -- देवी आभा। सचमुच उनके नेत्रों में जहां एक ओर उपस्थित है सूर्य जैसा तीव्र तपोबल का प्रभाव, वहीं उनके रोम-रोम से और मुख - मुद्रा से फूटती स्मित हास्य साक्षात् पूर्णिमा के चन्द्र के समान ही सुधामय है, किंतु इस ज्योतिपुंज को स्पर्श करने के लिये व्यक्ति को थोड़ा तो प्रयास करना ही होगा, जिस प्रकार से बन्द पड़े कमरे में केवल एक खिड़की खोलना पर्याप्त होता है और एक ही क्षण में सूर्य अपनी तेजस्विता और चन्द्रमा अपनी पीयूष रश्मियों का प्रवेश बिना किसी हिचकिचाहट के औदार्य पूर्वक कर देता है, वही स्थिति होती है किसी भी तपः पूत एवं ऐसे ऋषि के समक्ष। सूर्य का प्रकाश या चन्द्रमा की किरणें धीरे-धीरे करके कमरे में प्रवेश नहीं करतीं यह तो निर्भर करता है कि व्यक्ति ने उनके प्रवेश के लिये क्या स्थान बनाया है, ठीक यही स्थिति है 'पूज्यपाद गुरुदेव' के सन्दर्भ में। प्रारम्भिक प्रयास करने की आवश्यकता है और आप्लावित कर लेना है अपने आप को उनकी दिव्यता से, केवल एक उपस्थिति के पश्चात्, फिर उनके व्यक्तित्व के बारे में अधिक कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता शेष रह ही कहां जाती है!

यह जीवन का एक सत्य है कि ऐसे दिव्य व्यक्तित्व इस धरा पर अधिक समय के लिये अवतीर्ण नहीं होते। पूज्यपाद गुरुदेव भी यदि इस धरा पर उपस्थित हैं, तो केवल अपने गुरुदेव 'पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी' की आज्ञा को शिरोधार्य करने के कारण, जिससे कि छल, कपट, व्याभिचार और निरंतर यद्धों से बोझिल हो गई इस धरा पर पुनः शांति और सौजन्यता का वातावरण स्थापित किया जा सके। युद्ध और साम्प्रदायिक तनाव किसी एक स्थान पर ही केन्द्रित नहीं रहते, इनसे उत्पन्न होने वाली घृणा की लहरियां, भय का प्रकोप, धीरे-धीरे बढ़ता हुआ, पूरी मानवता को सहमा कर रख देता है, और यही तो देख रहे हैं हम -- आप जीवन में प्रतिदिन। जिस प्रकार जंगली घास धीरे-धीरे बढ़ती हुई, अपने मध्य में खिले हुए इक्का-दुक्का सुन्दर पुष्पों को भी दबोच कर रख देती है, उन्हें अपने तीक्ष्ण किनारों से विदीर्ण कर देती है, उसी प्रकार यदि कहीं कोई इक्का-दुक्का मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति है भी तो वह सहम-सिमट जाता है ऐसी ही दूषित प्रवृत्तियों के बीच में, और इस जंगली घास को, घृणा-वैमनस्य की इन घास-पतवारों को समाप्त करने के लिए जो अस्त्र उठाना पड़ता है, वही साधना जगत में होता है -- देवी कृपा का बल। आज पूज्यपाद गुरुदेव के वरदहस्त के नीचे 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' संस्था में ऐसे ही सैकड़ों साधक और सुयोग्य शिष्य आगे बढ़कर

उन मूल्यों के प्रतिस्थापन के लिये सन्नद्ध हैं, जो कि अन्य लोगों द्वारा केवल की कहा - सुना जाने वाला विषय मात्र है।

आज जबकि विश्व में युद्ध की काली छाया दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है, सन्देह और उहापोह के वातावरण में जीवन निराश और हताश होता जा रहा है, तब पूज्यपाद गुरुदेव का इस प्रकार से सक्रिय होना सचमुच आश्चर्यजनक है। प्रचार और प्रसार से सर्वथा दूर रहते हुए, आलोचनाओं और विरोधों में अपने को अडिग बनाये रखते हुए, उन्होंने मौन रहते हुए, साधनाओं की ऐसी गंगा प्रवाहित की है, जो आज गंगासागर जैसी पूर्णता प्राप्त कर चुकी है। क्योंकि यह नदी बीच में समाप्त होने वाली नदी नहीं है, यह प्रवाहित हुई है एक देवपुंज के द्वारा, और जाकर पूर्णता से मिलती है वहां-- जहां जीवन का महासमुद्र लहरा रहा है। अन्य मतों की भांति पूज्यपाद सद्गुरु गुरुदेव ने पोथी-पत्रों में बन्द होने वाला ज्ञान या अटपटा और रहस्यमय ज्ञान अपने पाठकों और शिष्यों को नहीं दिया। निरंतर कटु आलोचनाओं के बीच भी उन्होंने “मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान” पत्रिका द्वारा समाज को ऐसा दुर्लभ ज्ञान और गोपनीय साधनाएं दी हैं, जिनकी उपादेयता का मूल्यांकन, शायद समाज आज नहीं कर पाएगा।

केवल साधनाओं का ज्ञान ही नहीं, केवल उपदेश ही नहीं, उन्होंने अपने तपस्यात्मक अंश को जिस प्रकार से दीक्षाओं

के माध्यम से निःसंकोच वितरित किया है, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि वास्तव में भगवान शिव ही गुरु बनकर अवतरित हुए हैं, क्योंकि अपना सर्वस्व लुटा देने की प्रवृत्ति भगवान शिव के अतिरिक्त किस अन्य देवी या देवता में नहीं रही है... धर्म-चक्र प्रवर्तन है यह! बुद्धत्व का पुनः आगमन है इस धरा पर, जिनत्व का पुनर्प्रकटीकरण है, राम की मर्यादा और कृष्ण का श्रृंगार भी तो! क्योंकि गुरुदेव ने पहली बार अपने व्यक्तित्व से शास्त्रों में निहित इस तथ्य को प्रकट किया है कि गुरु तो वास्तव में चौंसठ कलाओं से पूर्ण व्यक्तित्व होते हैं, जीवन के प्रत्येक रंग, प्रत्येक सुख-दुख और विसंगति का ज्ञान होता है उन्हें, और इसी की पुष्टि होती है।

पूज्यपाद गुरु देव ने स्वयं गृहस्थ जीवन को “धारण” कर एक आम व्यक्ति की तरह ही नित्यप्रति की समस्याओं से जूझ कर, केवल एक परिवार का ही नहीं, अपने सैकड़ों हजारों शिष्य रूपी पुत्रों का भी दायित्व अत्यन्त कुशलता पूर्वक वहन कर, जिस प्रकार प्राचीन गुरु - शिष्य परम्परा का एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसकी तो समता आने वाले समय में सम्भव ही नहीं हो सकेगी। ऐसे ही मानवीय गुणों से आपूरित, तपः पुंज से विभूषित, ऋषियों और मुनियों के जीवन में चिन्तनीय, योगियों द्वारा वन्दनीय पूज्यपाद गुरुदेव को शत शत वन्दन।

— प्रकाशक

त्रिजटा अघोरी

तन्त्र के क्षेत्र में जो थोड़ी बहुत भी रुचि रखता है उसके मन में कहीं न कहीं यह इच्छा अवश्य दबी हुई होती है कि वह अपने जीवन में त्रिजटा अघोरी के एक बार दर्शन कर ले और इस महान सिद्धाश्रम संस्पर्शित तंत्र प्राण व्यक्तित्व के साथ कुछ क्षण व्यतीत करे।

परन्तु बहुत ही कम सौभाग्यशाली हैं जिनकी भेंट त्रिजटा अघोरी से जीवन में हुई हो। मैं जब भारत की गूढ़ विद्याएं सीखने गुरुजी के घर गया तो मुझे विश्वास नहीं था कि गुरुदेव मुझे अपना लेंगे और मैं उनसे कुछ प्राप्त कर सकूंगा, इसके लिए मैं घर से निकलने से पूर्व सवा लाख गुरु मंत्र जप प्रयोग करके निकला था, जिससे कि वे मुझे अपना लें, और मेरा यह परम सौभाग्य रहा कि मुझे कुछ वर्ष गुरुवर **डा० श्रीमाली जी** के सान्निध्य में कुछ सीखने का अवसर मिला और आज मैं इस क्षेत्र में जो कुछ भी हूं उसका पूरा-पूरा श्रेय गुरुदेव को ही है।

इतने वर्षों के बाद मैं अधिकार पूर्ण स्वर से कह सकता हूं कि गुरुदेव के समान सहनशील और सहायक दूसरा कोई व्यक्तित्व नहीं होगा, उनका व्यक्तित्व ठीक उस बादाम की तरह है, जो ऊपर से अत्यन्त कठोर और कड़ा दिखाई देता है, पर उसके भीतर घुसने पर सुस्वादु मधुर फल खाने को मिलता है, गुरुदेव ऊपर से अत्यन्त सामान्य, सरल दिखाई देते हैं, उन्हें देख कर या उनके साथ चार - छः महीने रहने के बाद भी कुछ ऐसा संकेत या अनुभव नहीं होता कि इन्हें कुछ जानकारी है भी या नहीं।

इसमें एक बुराई यह कि सामान्य व्यक्ति मिलने के बाद एकदम से बहुत ऊंची धारणा नहीं बना लेता, और कुछ दिनों के बाद छिटक कर दूर जा खड़ा होता है, परन्तु इसके पीछे एक अच्छाई यह भी है कि जो सौभाग्यशाली हैं, जिनमें धैर्य और गम्भीरता है, वे ही उनसे जुड़े रहते हैं, और जब उनकी कठोर कसौटी पर व्यक्ति खरा उतर जाता है, तो उसके जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

मैं लगभग तीन वर्षों तक उनके साथ रहा। इन तीन वर्षों में वे मुझे एक सामान्य गृहस्थ दिखाई दिए, परन्तु उनके अंदर भारत की गूढ़ विद्याओं का अथाह सागर लहरा रहा है

और उनसे जो कुछ मुझे प्राप्त हो सका है, वह मेरे जीवन की अमूल्य निधि है। इस छोटे से ज्ञान के बलबूते पर यदि मुझे इतना अधिक सम्मान मिला है तो उनके समान ज्ञान की पूर्णता पर स्थिति और क्या होगी, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

और यदि उनके व्यक्तित्व का सही रूप से विश्लेषण करना हो या उन्हें भली प्रकार से समझना हो तो इस गृहस्थ में या सांसारिक वृत्तियों के बीच उन्हें पूर्ण रूप से नहीं जाना जा सकता, हम जब उच्च कोटि के योगियों और सन्यासियों के बीच बैठते हैं और श्रीमाली जी की चर्चा होते ही जिस प्रकार से वे लोग श्रद्धावत होकर भाव-विभोर हो जाते हैं, उसी के आधार पर उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जा सकता है।

उन दिनों भी, जब मैं उनके चरणों में दुर्लभ ज्ञान प्राप्त कर रहा था, तब भी मैंने दबी जबान से कई बार निवेदन किया था, कि मुझे एक बार त्रिजटा अघोरी के दर्शन करने हैं। आप किसी भी यात्रा में मुझे साथ रखें, जिससे कि मैं उस विशाल तेजपुंज के दर्शन कर सकूँ, परन्तु हर बार वे बात टालते रहे।

विदा होते समय उन्हें सब कुछ याद था, वे बोले तुम्हारी इच्छा यह भी रही है कि तुम त्रिजटा अघोरी से मिलो, यह इच्छा तुम्हारी शीघ्र ही पूरी हो सकेगी।

जोधपुर से आने के बाद मेरी यह इच्छा पूरे चार वर्ष

के बाद पूरी हुई, जब मैं साधना माध्यम से संकेत प्राप्त होने पर त्रिजटा अघोरी से मिलने के लिए रवाना हुआ।

इस बीच में जिस प्रकार से उनके व्यक्तित्व पर अनैतिक, अन्यायपूर्ण और धिनौना कीचड़ उछालने के जो प्रयत्न किए जाते रहे, उससे हम सब सन्यासी क्षुब्ध थे। हम उनके पास जाना भी चाहते थे, परन्तु उन्होंने बलपूर्वक मना कर दिया कहा कि यह स्थिति मेरे साथ है, और मैं अकेले ही इसको भोगूंगा। मन मार कर हम विचलित से घूमते रहते थे। इसी बीच यह संकेत मिलने पर मन को जरा तसल्ली हुई, और मैं त्रिजटा अघोरी से मिलने चल पड़ा।

उनका निश्चित पता मुझे ज्ञात नहीं था, परन्तु साधनात्मक संकेतों के आधार पर से मैं बराबर गतिशील रहा। सबसे पहले मैं देहरादून पहुंचा और वहां से बस द्वारा मसूरी पहुंचकर एक दिन विश्राम किया। दूसरे दिन यद्यपि नवम्बर का महीना होने के कारण सर्दी ज्यादा थी, फिर भी अपने पथ पर आगे बढ़ गया। मसूरी को पार करने के बाद लाल टीब्बा स्थान आया, जो कि परिचित स्थान है। **यहां पर कई वर्षों से पगला बाबा रहते हैं, जिन्होंने महावीर साधना सिद्ध कर रखी है।** कुछ समय उनके पास ठहर कर मैं वहां से आगे बढ़ गया। लाल टीब्बे से हिमालय पर जमी बर्फ स्पष्ट दिखाई देती है, जहां से उत्तर की तरफ अस्सी किलोमीटर दूर **भैरव पहाड़ी** है, तथा सारा

पैदल रास्ता है, इसके आगे मैं पहली रात **वेलाटीला** नामक गांव में ठहरा, यहां **मीरा बहिन** सामाजिक कार्यकर्त्री हैं, उनसे त्रिजटा के बारे में थोड़ा बहुत पता चला। दूसरी रात मेरा विश्राम **‘पीलवा’** नामक ग्राम में हुआ, यह ग्राम **घेरण्ड बाबा** की वजह से मशहूर है। वे उच्च कोटि के तांत्रिक हैं और कुछ समय त्रिजटा अघोरी के साथ रह चुके हैं। उनसे मुझे त्रिजटा के बारे में काफी कुछ जानकारी मिली। यहां से भैरव पहाड़ी साफ-साफ दिखाई देती है।

चौथे दिन जब मैं भैरव पहाड़ी पर पहुंचा तो कोहरा सा छाया हुआ था, पर कुछ ही समय बाद कोहरा छंट गया और प्रखर धूप निकल गई, यह मेरे लिए शुभ संकेत था। भैरव पहाड़ी अत्यन्त कठिन और श्रम साध्य है। लगभग पांच घंटे की जी-तोड़ चढ़ाई के बाद ही मैं ऊपर पहुंच सका, जब मैं ऊपर पहुंचा तो उस सर्दी में भी मैं पसीने से लथ-पथ था और मेरा सारा शरीर निढाल सा हो गया था, फिर भी मन में प्रसन्नता थी कि मैं गन्तव्य स्थल तक पहुंच गया हूं।

सामने ही छोटा सा भैरव मंदिर, जिसमें भैरव की प्राचीनतम प्रतिमा स्थापित है। उसके आगे पहाड़ी पर ही बड़ा सा मैदान है, जहां से चारों तरफ का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त ही मनोहर और रमणीक है। एक तरफ ऊपर से झरना सा आता है, जिससे वहां का कुण्ड हमेशा ताजे पानी से लबालब भरा

रहता है। इसके पास ही गर्म पानी का कुण्ड है, जिसमें से भाप निकलती रहती है। कहते हैं कि चावल की पोटली बनाकर इस गर्म पानी में लटका दी जाय तो दो मिनट बाद ही चावल सिक जाते हैं।

मुझे कहीं पर भी त्रिजटा दिखाई नहीं दिए। मैंने भैरव मंदिर की परिक्रमा भी की। **मंदिर के बगल में ही गुफा है, संभवतः यही त्रिजटा का आवास हो, इसके पीछे पंद्रह-बीस और भी छोटी-छोटी गुफाएं दिखाई दी जो कि सुंदर और सुरम्य थीं, ऐसा लग रहा था कि इन गुफाओं में भी कोई है, जो कि साधनारत है।**

मैं धूमकर भैरव मंदिर के सामने आ गया और भैरव की स्तुति कर एक तरफ बैठ गया, अब तक मैं स्वस्थ हो गया था, गर्म सोते से हाथ पैर मुंह धोने से मेरी सारी थकावट दूर हो गई थी।

अकस्मात् एक तरफ से हलचल दिखाई दी। पहले दौड़ते हुए दो तीन शिष्य आए जैसे कि वे हांफ रहे हों और उनके पीछे ही एक उच्च कोटि का भव्य व्यक्तित्व प्रकट हुआ, लम्बा-चौड़ा ऊंचा कद, लम्बी जटाएं जो कि कमर तक लटकी हुई थीं, बड़ा सा दिप्-दिप् करता हुआ चेहरा, जिस पर लाल सुख बड़ी-बड़ी दो आंखें, विशाल स्कन्ध, लम्बी बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा रोम मिश्रित सीना, ऐसा लग रहा था, कि जैसे कोई

पुराणों में वर्णित विशाल दानव सामने उपस्थित हो गया हो, मोटी और पुष्ट जंघाएं तथा कमर के नीचे व्याघ्र चर्म लपेटे हुए, इसके अलावा पूरे शरीर पर किसी भी प्रकार का कोई परिधान नहीं था, कंधे पर एक मोटा सा कद्दावर बकरा लिए हुए जब वह मेरे सामने आया तो मैं एकबारगी सितपिटाकर सहम सा गया, ऐसा लग रहा था कि जैसे विशाल हिमालय के नीचे ही छोटी सी पहाड़ी खड़ी हो।

उसने जोरों से हुंकार भरी, सच कह रहा हूं, उस समय लगा जैसे बांसों का जंगल परस्पर खड़खड़ा गया हो। हुंकार भरने के साथ ही त्रिजटा ने उस लम्बे चौड़े बकरे को जमीन पर खड़ा किया। वह जीवित बकरा त्रिजटा की विशाल मुट्ठी की कसावट से छूटते ही हड़बड़ा कर अपने पांवों पर खड़ा हुआ, तभी मेरे सामने त्रिजटा ने उस मोटे ताजे कद्दावर बकरे को बाएं हाथ से ऊपर उठाया और दाहिने हाथ से उसकी गर्दन मरोड़ दी, एक झटके से गर्दन को खींचकर फेंक दी और उसके गरम-गरम निकलते खून से अपना मुंह लगा लिया, यह सब कुछ पलक झपकते ही हो गया, कुछ ही क्षण में वह सारा खून गटक गया और फिर उसकी पस्त लाश का जमीन पर फेंक, दाहिने हाथ से मुंह पोंछ, जोरों से 'जय भैरव नाथ' कह कर एक तरफ पत्थर की उभरी हुई चट्टान पर बैठ गया।

शिष्यों ने तुरंत टूटी हुई गर्दन को धड़ के साथ लगा कर रख दिया। मेरे लिए यह सब कुछ सर्वथा अप्रत्याशित था, एकबारगी तो मैं अत्याधिक जीवट वाला होने के बावजूद भी अंदर तक से कांप गया और **उसकी हुंकार से न चाहते हुए भी मेरा सारा शरीर थरथराने लगा। उसकी नजर अब सीधी मुझ पर थी,** मेरा चेहरा भय से पीला पड़ता जा रहा था, मैं प्रयत्न करके भी मुंह से बोल नहीं निकाल पा रहा था, मेरा सारा शरीर पीपल के पत्ते की तरह कांप रहा था।

अकस्मात् वह व्यक्तित्व जोरों से हंसा, ऐसा लगा कि जैसे पहाड़ पर भूकम्प आ गया हो और सारा पहाड़ खड़खड़ाकर नीचे गिर रहा हो, उस खड़खड़ाहट की ध्वनि के आघात से ही मैं जमीन पर मजबूरन बैठ सा गया, परन्तु तभी मुझे अपनी सुध हो आई और साहस कर मैं पुनः अपने पैरों पर खड़ा हो सका।

उसने उस मरे हुए बकरे पर नजर डाली, शिष्यों ने अब तक उसका सिर धड़ से बराबर लगा दिया था, त्रिजटा ने कुण्ड से हाथ में जल लेकर कुछ मंत्र पढ़कर उस पर छिड़का और दूसरे क्षण वह बकरा जीवित होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

यह मेरे लिए दूसरा बड़ा आश्चर्य था, निश्चय ही त्रिजटा ने "शुक्रोपासित मृत संजीवनी विद्या" का प्रयोग किया

था और जीवित होते ही बकरा चारों पैरों से कूद कर पहाड़ी के नीचे उतर गया।

अब त्रिजटा ने मेरी ओर घूरा और अपना दाहिना हाथ मेरी पीठ पर लगा दिया। मैं अपने आपको काफी हृष्ट पुष्ट समझता हूँ, परंतु मुझे ऐसा लग रहा था कि उसकी हथेली ने मेरी पूरी पीठ को घेर रखा हो। बोला तुम आ गए, मुझे तुम्हारे आने का संकेत मिल चुका था। मैं थोड़ा बहुत आश्वस्त हुआ, मैंने उन्हें अपना नाम बताया और संक्षेप में जानकारी दी कि अब तक मैं कौन-कौन सी विद्याएं सीख चुका हूँ।

जब मैंने उन्हें जानकारी दी कि मेरे गुरुदेव पूज्य श्रीमाली जी हैं और उन्हीं से मैंने तीन वर्ष तक यह थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त किया है, तो उसका चेहरा प्रसन्नता के मारे खिल उठा, श्रीमाली जी नाम लेते ही उसके चेहरे पर एक अपूर्व आभा दिखाई दी और प्रसन्नता के आवेग में उसने दाहिने हाथ से मुझे उठा लिया, **उसकी हथेली में मैं गेंद की तरह लटका हुआ था,** और उसकी प्रसन्नता को मैं अनुभव कर रहा था, दूसरे ही क्षण उसने धीरे से मुझे जमीन पर खड़ा किया और अपने सीने से भींच कर मेरे सिर पर करुणापूरित हाथ फेरा, तो मुझे ऐसा लगा कि इस कठोर और भयानक व्यक्तित्व के पीछे करुणामय हृदय है और उसमें दया, स्नेह, प्रेम तथा मधुरता का सागर लहलहा रहा है।

त्रिजटा पुनः उसी पत्थर की चट्टान पर बैठ गया, मुझे भी पास में बैठने का संकेत दिया, पर मैं उनके सामने नम्रतापूर्वक खड़ा रहा, वे ज्यादा से ज्यादा मेरे गुरुदेव के बारे में जानना चाहते थे, समझना चाहते थे।

पूज्य गुरुदेव के इस गृहस्थ जीवन से वे थोड़े बहुत परिचित थे और मुझे जितनी जानकारी थी, वह मैंने उन्हें बताई, मेरी बात सुनते सुनते कई बार उनके चेहरे का रंग बदला और एक बार तो मेरे यह कहने पर कि इतनी भीषण आग में भी सर्वथा शांत होकर बैठे हैं, और सहन कर रहे हैं, तो **उनका चेहरा क्रोध से लाल भभूका हो गया, आंखें अंगार की तरह सुर्ख हो गईं** और अपनी दाहिनी हथेली चट्टान पर पटक कर बोले-“अब मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहता, मैं अब किसी की कोई परवाह नहीं करूंगा, पता नहीं क्यों वे वहां आग में बैठे हुए हैं, क्यों नहीं पुनः सिद्धाश्रम आ जाते हैं? अब मैं न तो सिद्धाश्रम की बात सुनूंगा और न श्रीमाली जी की ही। अगर सिद्धाश्रम से भी विद्रोह करना हुआ तो मैं करूंगा, परन्तु उन्हें अकेले आग में जलते हुए नहीं देख सकता।

उनके विरुद्ध जिन्होंने भी दुष्कर्म और षडयंत्र किए हैं, उनको फल तो अवश्य ही मिलेगा, और शीघ्र मिलेगा, मैंने श्रीमाली जी को कम से कम दस बार संकेत किया है, पर उन्होंने कुछ भी करने के लिए मुझे कसम दे रखी है,

मैं उनकी सौगन्ध को टाल नहीं सकता, उससे मैं बंधा हुआ हूँ, अन्यथा मैं अब तक सब कुछ कर चुका होता”।

क्रोध के मारे त्रिजटा उफन रहा था बोला-“यह उन्हीं का दमखम है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी शांत बैठे हुए हैं, क्यों नहीं अपनी सिद्धियों का प्रयोग करते? आज का युग बदल गया है, आदमी ओछा और राक्षस प्रवृत्ति का हो गया है, वह जमाना बीत चुका जब साधु को शांत रहना चाहिए, वह समय समाप्त हो गया जब सन्यासी को सब कुछ सहन करना चाहिए, अब तो इस राक्षस युग में आंख से आंख मिलाकर बात करने का समय आया है, ईंट का जबाब पत्थर से देने का युग आया है।

अब मैं और सहन नहीं कर सकूंगा, चाहे मुझे उनकी स्वयं की सौगन्ध ही क्यों न तोड़नी पड़े”।

क्रोधातिरेक में उनका सारा शरीर लाल सुर्ख अंगारे की तरह दमक रहा था और फिर गुस्से में वे तेज-तेज चलते हुए अपनी गुफा में प्रवेश कर गए।

उनकी आवाज, उनके क्रोध, और उनकी उत्तेजना से सारा वातावरण अग्नि की तरह दहक रहा था, हवा सन्न सी होकर रह गई थी और वातावरण में एक अजीब प्रकार का बोझिलपन आ गया था, सारे शिष्य उस क्रोधमय भयानक आवाज को सुनकर बाहर निकल आए थे, उन्होंने अपने पूरे जीवन में

त्रिजटा को इतनी क्रोधावस्था में नहीं देखा था।

बाद में उनके शिष्यों से पता चला कि श्रीमाली जी का त्रिजटा से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, यद्यपि काफी समय पहले श्रीमाली जी यहीं पर कुछ सीखने के लिए आए थे और इसी पहाड़ी पर काफी समय रहे भी थे। उन्होंने तंत्र की उच्च कोटि की क्रियाएं इनसे सीखी भी थीं, पर बाद में वे काफी आगे बढ़ गए और दोनों ही सिद्धाश्रम संस्पर्शित होने के कारण गुरु भाई की तरह हैं, और इनके मन में श्रीमाली जी के प्रति अत्याधिक आदर और सम्मान है।

उन्हें सारी घटनाओं की जानकारी है, आध्यात्मिक एवं साधनात्मक रूप से इन्होंने प्रत्येक विपरीत परिस्थिति के बाद श्रीमाली जी से सम्बन्ध स्थापित किया, और इतने ही उत्तेजना पूर्ण शब्दों में विरोधियों को उनकी हैसियत दिखाने का आग्रह किया, परन्तु उनकी सौगन्ध को त्रिजटा नहीं तोड़ सकते और इसीलिए आग में दहकते हुए भी चुप हैं।

उनके प्रधान शिष्य से बातचीत करने पर पता चला कि पिछले दिनों उच्च कोटि के योगियों और तांत्रिकों की गोष्ठी हुई थी, वे सभी श्रीमाली जी से घनिष्ठ हैं और किसी न किसी क्षेत्र में श्रीमालीजी से मार्गदर्शन प्राप्त कर चुके हैं। उन सभी का यह आग्रह था कि अब उन्हें गृहस्थ में और सांसारिक जीवन में रहने की और इतना विरोधाभास भोगने की जरूरत नहीं है,

उन्हें वापिस सन्यास जीवन में आ जाना चाहिए। उन सभी ने यह भी निश्चय किया था कि **परम श्रेष्ठ योगीराज सिद्धाश्रम अधिष्ठाता स्वामी सच्चिदानन्द जी** से आग्रह किया जाए कि उन्हें वापस बुला लें। इस प्रकार उन्हें आग में झोंके रहने से कोई लाभ नहीं है। राक्षसों के बीच राक्षस बन कर ही जिन्दा रहा जा सकता है। या तो उन्हें सब कुछ करने की अनुमति दी जाए या उन्हें पुनः सन्यास जीवन प्राप्त करने का अधिकार दिया जाए। इस प्रकार उन्हें घुटते हुए नहीं देखा जा सकता।

यह सही है कि वे सब कुछ झेलने के बाद भी शांत बने रहेंगे, यह उन्हीं का तपोबल है कि वे इतनी अधिक विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग बने रहे हैं, सब प्रकार से समर्थ और श्रेष्ठ होने के बावजूद भी सामान्य गृहस्थ रहे हैं, परन्तु इसकी भी एक सीमा होनी चाहिए।

ठीक है सिद्धाश्रम भारतवर्ष की पुण्य भूमि में भारत की प्राचीन गौरवपूर्ण विद्याओं को स्थापित करना चाहता है और इसके लिए समय-समय पर उच्च कोटि को साधकों को भी भेजना उसका कर्तव्य है। गुरुदेव संसार और सिद्धाश्रम के बीच की कड़ी हैं, परन्तु इसे कौन समझ पाया है? लोगों ने इसका क्या लाभ लिया है? **यह दुर्भाग्य ही है कि हम किसी व्यक्तित्व के बाद ही यह एहसास करते हैं कि उनसे कुछ प्राप्त हो जाता तो ज्यादा अच्छा रहता, परन्तु तब तक तो**

वह व्यक्तित्व ही चला जाता है।

सारा वातावरण बोझिल हो गया था। उस दिन और दूसरे दिन भी त्रिजटा अपनी गुफा से बाहर नहीं निकले थे। तीसरे दिन प्रातःकाल वे गुफा से बाहर निकले तब तक शांत हो चुके थे।

मैं करीब एक सप्ताह तक वहां रहा, और इस एक सप्ताह में मैंने त्रिजटा के दूसरे रूप को भी देखा। इसमें कोई दो राय नहीं कि तंत्र के क्षेत्र में त्रिजटा संसार के अद्वितीय साधक हैं। उनकी बराबरी कोई कर ही नहीं सकता। 'मृत संजीवनी विद्या' के वे एकमात्र जीवित साधक हैं और तंत्र की समस्त क्रियाओं पर उनका असाधारण अधिकार है, साथ ही साथ वे अत्यन्त ही सरल, सौम्य और सहृदय हैं, उनका हृदय बच्चे की तरह कोमल और भावुक है। ऊपर से इस भयंकर चट्टान को देखकर कल्पना नहीं की जा सकती कि इसके भीतर ठण्डे शीतल पानी की झरना भी बह रहा है।

श्रीमाली जी के प्रति उसके मन में अगाध श्रद्धा है। उन्होंने एक दिन बातचीत में मेरे कंधे पर हाथ रखकर सजल नयनों से कहा था कि, वे वहां पर बैठे हैं, मैं यहां पर अग्निवत् जल रहा हूं, एक क्षण के लिए मैंने आराम नहीं लिया है।

दूसरे प्रसंग में उन्होंने कहा था कि वास्तव में ही वे लोग अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं जिनको श्रीमाली जी का संरक्षण

प्राप्त है, या जो उनके शिष्य हैं। आज तो नहीं, पर कल वे शिष्य अवश्य ही अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेंगे कि वे एक महान व्यक्तित्व के सम्पर्क में रह चुके हैं।

एक अन्य प्रसंग में उन्होंने कहा था कि मैं उस व्यक्तित्व को भली प्रकार से जानता हूँ। शिष्यों को परखने की उनकी कसौटी अलग ही है। हो सकता है वे शीघ्र ही सिद्धाश्रम जाने वाले हैं, और उससे पहले इस प्रकार का वातावरण बनाकर देखना चाहते हैं, कि वास्तव में ही कौन ऐसे शिष्य हैं, जो इस भयंकर आग में भी उनके साथ हैं।

हिमालय स्थित साधकों की यह तीव्र लालसा है कि वे शीघ्र ही पुनः संन्यास लेकर हिमालय में आ जाएं जिससे कि उनके जैसा मधुर व्यक्तित्व अपने बीच पाकर वे आनन्दमय हों, उन्हें सभी दृष्टियों से पथ-प्रदर्शन प्राप्त हो, और मैं यह दावे के साथ कहता हूँ, कि जिस दिन वे संन्यास लेंगे, वह दिन गृहस्थ लोगों के लिए दुर्भाग्यमय होगा, क्योंकि उनके बीच से एक ऐसा व्यक्तित्व निकल जाएगा, जो कि वास्तविक रूप में अद्वितीय है, और वह दिन हम सब लोगों के लिए सौभाग्यशाली होगा, क्योंकि वह व्यक्तित्व भविष्य में हमेशा के लिए हमारे बीच रहेगा।

मैं लगभग एक सप्ताह तक वहां रहा और इस बीच मैंने देखा कि त्रिजटा एक अद्वितीय असाधारण व्यक्तित्व है।

प्रसाद स्वरूप उनसे मुझे दो महत्वपूर्ण विद्याएं भी प्राप्त हुईं जो कि मेरे जीवन की निधि हैं, विदा होते समय उन्होंने मुझे कहा कि वास्तव में ही तुम और तुम्हारे गुरुभाई सौभाग्यशाली हैं कि तुम लोगों को उनके चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और यह विश्वास रखो कि किसी भी हालत में तुम खाली हाथ नहीं रहोगे।

पहाड़ी से विदा देने के लिए वे काफी दूर तक मेरे साथ आए, यह मेरे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात थी। गुरुदेव का स्मरण आते ही पुनः उनकी आंखें भर आईं। उनकी आंखों में सजलता, और होठों पर एक दृढ़ निश्चय था जो कि अग्निवत् दहक रहा था, उनके होठ यह भी बोले - उनकी सौगन्ध का पालन करना भी मेरे लिए कठिन हो गया है, उन्हें इस प्रकार व्यथित होते मैं किसी भी हालत में न तो देख सकता हूँ, और न सहन कर सकता हूँ- और बोझिल मन से तुरंत वे मुड़कर ऊपर पहाड़ी की तरफ बढ़ गए।

०००००

तांत्रिक का

प्रतिशोध

कामाख्या मंदिर विश्व प्रसिद्ध है, क्योंकि यहां उच्च कोटि के साधकों ने साधनाएं सिद्ध की हैं, यह सारी भूमि ही पुण्य भूमि है, साधकों के लिए तीर्थ स्थली है। जो साधक हैं, उन्हें अपने जीवन में एक बार तो कम से कम इस कामाक्षा मंदिर में जाना ही चाहिए, तभी उन्हें अनुभव होगा, कि पुण्य भूमि का तात्पर्य क्या होता है। **उस स्थान का कुछ ऐसा ही महत्व है, कि व्यक्ति स्वयं साधना में रत हो जाता है।**

चारों तरफ का प्राकृतिक वातावरण और उसके बीच कामाक्षा का विश्वविख्यात मंदिर अपने आप में ही अद्वितीय और मनोहारी है। मां काली की भव्य विशाल मूर्ति जीवन को सान्त्वना और सुख देने में समर्थ है। उसकी लपलपाती निकलती हुई जीभ पूरे विश्व के दुःख और दैन्य को लीलने के लिए उद्यत

है, गले में पड़ी हुई नर मुण्डों की माला जीवन की निस्सारता को उद्घोषित करती है, और इससे बढ़कर मां काली का सम्पूर्ण विग्रह आँखों को संतोष और हृदय को सुख देने में समर्थ है।

यह मंदिर अत्यन्त प्राचीन है। कहते हैं कि जब भगवान शिव की अर्द्धांगिनी सती अपने पिता दक्ष के व्यवहार से अपमानित होकर यज्ञ कुण्ड में कूद पड़ी, तब क्रोधित अवस्था में भगवान शिव ने उसकी लाश को अपने कंधे पर उठाकर पूरे विश्व का भ्रमण किया। भगवान शिव इस कृत्य से इतने क्रोधित हुए कि उनकी आँखों से निकलती हुई चिनगारियां पूरे वन प्रान्तर को जला कर खाक कर रही थीं, उन्हें कहीं पर भी संतोष नहीं मिल रहा था, पर इस स्थान पर आते-आते सती का सिर गिर पड़ा और तभी से यह विश्व का श्रेष्ठतम शक्तिपीठ बन गया, **सबसे पहले भगवान शिव ने इस स्थान पर बैठकर उच्च कोटि की तांत्रिक साधनाएं सम्पन्न कीं** और कहा कि आज से यह स्थान स्वयं ही "सिद्ध स्थान" है, जो भी साधक यहां साधनाएं करेगा, उसे निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

और आज हजारों वर्ष बीतने पर भी भगवान शिव के ये शब्द अलौकिक रूप से फलप्रद हैं। पूरे संसार में कहीं पर भी बैठने से और साधना करने से भी यदि सफलता नहीं मिल रही हो और वह साधक इस स्थान पर बैठकर साधना

सम्पन्न करे तो उसे निश्चित रूप से सफलता मिल जाती है, और जिस प्रकार चाहे सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

कालांतर में इसी स्थान पर **मत्स्येन्द्रनाथ** और **गुरु गोरखनाथ** ने साधनाएं सम्पन्न की। जिन स्थान पर भगवान शिव बैठे थे, वही “**सप्त मुण्डी आश्रम**” कहलाया और ठीक इसी स्थान पर गोरखनाथ ने बैठकर अपनी साधनाओं के द्वारा अलौकिक सिद्धियां प्राप्त कीं। आगे चलकर **त्रिजटा अघोरी** ने भी छः वर्ष तक इसी स्थान पर बैठकर उन सिद्धियों को प्राप्त किया जो कि अपने आप में दुर्लभ और अलौकिक कहलाती हैं। **भूर्भुआ बाबा, स्वामी कार्तिकेय, विरुपाक्ष बाबा, स्वामी अंजनानन्द और कपाली बाबा** जैसे विश्वविख्यात योगियों ने भी इसी स्थान पर बैठकर अपनी साधनाएं सिद्ध कीं और उन्हें आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त हुई। आज भी लोग इन योगियों और साधकों के प्रति श्रद्धानत हैं जिन्होंने विश्व की लुप्त होती हुई साधनाओं और सिद्धियों को अक्षुण्ण बनाए रखा।

स्वामी असंज्ञानन्द देश के अद्भुत और आश्चर्यजनक सिद्धियों के स्वामी हैं, अघोर साधना के क्षेत्र में उनका कोई मुकाबला ही नहीं है, उच्च कोटि के साधक आज भी अपनी साधना प्रारम्भ करने से पूर्व **स्वामी असंज्ञानन्द** को मन ही मन प्रणाम कर साधना प्रारम्भ करते हैं, जिससे कि अप्रच्छन्न रूप

में ही सही, स्वामी जी का सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। लम्बा चौड़ा शरीर, विशाल वक्षस्थल और लम्बी जटाओं के **स्वामी असंज्ञानन्द** के व्यक्तित्व के सामने सिर स्वतः ही झुक जाता है। साधना और सिद्धियों के क्षेत्र में **स्वामी असंज्ञानन्द** महारथी हैं। उन्होंने अपने प्रयत्नों से और परिश्रम के बल पर उन अलौकिक सिद्धियों को भी प्राप्त कर लिया है, जो कि अपने आप में अद्वितीय कही जाती हैं। **उन्होंने कई कृत्याओं को भी सिद्ध कर रखा है, जिनके माध्यम से पूरे विश्व में तहलका मचाया जा सकता है।**

मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला है, और उनका दर्शन वास्तव में ही जीवन का पुण्य कहा जाता है। यद्यपि वे अत्यधिक शांत, सरल और सौम्य हैं, परन्तु यदि उनके अहं पर चोट की जाती है, या उन्हें कोई चुनौती देने की मुद्रा में खड़ा हो जाता है, तो वे क्रोध के साक्षात् विग्रह बन जाते हैं, उस समय उनका चेहरा ही नहीं, अपितु पूरा शरीर अग्निमय हो जाता और वे सामने वाले को ध्वंस करने में एक क्षण के लिए भी नहीं हिचकिचाते। ऊंचे से ऊंचा साधक और उनके शिष्य भी उनके इस रूप से और प्रभाव से परिचित हैं और इसीलिए उनसे बात करते हुए घबराते हैं, उनका रुख और प्रसन्न मुख मुद्रा देखकर ही उनसे बात करने का साहस जुटा पाते हैं, इसीलिए तो **त्रिजटा अघोरी** ने एक बार बातचीत के प्रसंग में

कहा था, कि “असंज्ञानंद क्रोध का ही दूसरा नाम है।”

सन् १९५२ का अप्रैल महीना, स्वामी असंज्ञानंद इसी सप्त मुण्डी स्थान पर बैठकर नव कृत्याओं को सिद्ध करना चाहते थे, जो कि अपने आप में दुष्कर और कठिन साधना कही जाती है। यह एक ऐसी साधना है, जिसे सिद्ध कर लेने पर व्यक्ति विश्व का अजेय साधक बन जाता है, परन्तु यदि पूरे साधनाकाल में कोई त्रुटि रह जाए तो वह स्वयं जल कर राख हो जाता है। ऐसी कठिन साधना को सम्पन्न करने के लिए काफी हिम्मत और हौसले की जरूरत होती है। इस साधना को सिद्ध करने के लिए स्वामी जी ने इस महत्वपूर्ण स्थान को चुना जिससे कि वे अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

स्वामी असंज्ञानंद कामाक्षा मंदिर पहुंचे और मां काली के सामने खड़े होते ही उनका सारा शरीर रोमांचित और भाव विह्वल हो उठा, उनके मुंह से अनायास ही मां काली की विश्व प्रसिद्ध स्तुति के शब्द निकल पड़े-

ध्यायेत कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहु रूपिणीम्
चतुर्भुजां लसज्जितां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् । । १ । ।
नीलोत्पलसमप्रख्यां शत्रुसंध विदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा । । २ । ।
विभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ।
अट्टाहास निरतां सर्वदा च दिगम्बराम् । । ३ । ।

हां हीं कालिकें घोरदंष्ट्रे रुधिरप्रिये रुधिरपूर्णवक्त्रे
रुधिरावृतस्तति मम सर्वशत्रून् खादय खादय हिंस हिंस
मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय
विद्रावय विद्रावय शोषय शोषय स्वाहा । रां रीं काराये
महीपशत्रून् मदेय स्वाहा ।

अर्क जय जय किर किर किर किर मर्द मर्द
मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्ष भक्ष त्रोटय
त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरुषान्
स्त्रियो मम वश्यं कुरु कुरु अश्वान् गजान् दिव्यकामिनी
पुत्रान् राज्याश्रयं देहि देहि नूतनं नूतनं धान्यं धनं यक्षं
रक्षां क्षां क्षीं क्षं क्षैं क्षः स्वाहा । ।

और बोलते-बोलते ही काली विग्रह के सामने उनका ध्यान लग गया, कितने समय तक वे ध्यानस्थ रहे, इसका उन्हें होश ही नहीं रहा, जब वे पुनः चैतन्य हुए तो उन्हें लगा कि मां काली मंद-मंद मुस्करा रही है और अपने स्नेह पूर्ण नेत्रों से आशीर्वाद दे रही है -- “वत्स! जिस उद्देश्य से और जिस साधना के निमित्त तुम आए हो वह साधना प्रारम्भ करो, तुम्हें अवश्य ही सफलता मिलेगी।”

कुछ क्षण वहां बैठने के बाद स्वामी असंज्ञानन्द सप्तमुण्डी स्थान पर आ गये, जहां पर उन्हें आने वाले दिनों में साधना सम्पन्न करनी थी, सप्तमुण्डी स्थान साधना के लिए

प्रसिद्ध हैं, कहते हैं कि इस स्थान पर भगवान शिव ने स्वयं बैठकर त्रैलोक्य विजय साधना सम्पन्न की थी, इसके बाद उच्चकोटि के साधकों, ऋषियों ने भी इस स्थान का महत्व अनुभव किया था। कालांतर में शंकराचार्य ने इसी सप्तमुण्डी शिला पर बैठकर विश्व प्रसिद्ध काली स्तोत्र की रचना की थी, और स्तोत्र पूरा होते-होते भगवती महाकाली ने स्वयं वहां उपस्थित होकर शंकराचार्य को अपने हाथों से भोजन कराया था, इसी स्थान पर बाद में गुरु गोरखनाथ ने आश्रम स्थापना की और तभी से यह स्थान “सप्तमुण्डी आश्रम” कहलाया। कहा जाता है, कि यहां पर सप्तमुण्डों की बलि दी गई थी, कुछ लोगों की धारणा के अनुसार यहां पर एक बार मंत्र उच्चारण करने पर सात प्रतिध्वनियां स्वतः ही उच्चरित हो जाती हैं, इसीलिए इस स्थान को सप्त मुण्डी कहते हैं। जो भी हो पर निश्चित है कि यह स्थान साधना की दृष्टि से अद्वितीय है।

कपाल स्वामी भी इस देश के महान योगी और तंत्र साधनाओं के अधिकारी साधक हैं। लगभग 950 वर्षों से भी ज्यादा आयु प्राप्त करने के बावजूद भी वे चिरयौवनमय दिखाई देते हैं, उनके चेहरे पर एक अपूर्व आभा और तेज प्रतिक्षण अनुभव होता है।

साधना के क्षेत्र में वे जितने पहुंचे हुए योगी हैं, क्रोध के क्षेत्र में भी वे उतने ही बड़े दुर्वासा हैं, किस बात

पर कब क्रोध आ जाएगा, इसका कुछ पता नहीं चलता, इसीलिए उनके शिष्य भी सोच समझकर उनसे बात करते हैं।

कपाल स्वामी की भी कई दिनों से मन ही मन इच्छा थी कि सप्त मुण्डी आश्रम पर जाकर वायवीय सिद्धि प्राप्त की जाय जो कि तंत्र के क्षेत्र में एक अद्वितीय साधना कही जाती है, और अपने तीन चार शिष्यों के साथ वे कामाक्षा की तरफ आ भी गए।

सबसे पहले वे मां काली के सिंह द्वार पर पहुंचे और खड़े-खड़े ही कात्यायनी प्रयोग से उन्होंने मां काली का स्तवन किया, दाहिने अंगूठे को चीर कर टपकती हुई रक्त की बूंदों से उसका अभिषेक किया। स्तवन-अभिषेक के बाद शंकराचार्य प्रणीत ‘काली स्तुति’ सम्पन्न कर प्रतिज्ञा की, “मां! मैं आपके ही सान्निध्य में कल प्रातःकाल से सप्त मुण्डी आश्रम पर वायवीय साधना प्रारम्भ कर रहा हूं, और तब तक मैं अपने स्थान से उठूंगा ही नहीं जब तक कि मुझे पूर्ण सिद्धि और सफलता नहीं मिल जाएगी।”

काली मंदिर से बाहर निकल कर वे सप्त मुण्डी आश्रम की ओर आए तो उन्होंने देखा कि आश्रम की पवित्र दिव्य सप्त मुण्डी शिला पर कोई और योगी तांत्रिक बैठा हुआ है, और उसके तीन चार शिष्य भी उसके आसपास खड़े परस्पर वार्तालाप में संलग्न हैं।

यहां आश्रम होने पर भी आश्रम जैसा वातावरण नहीं है, अपितु एक अत्यन्त विशाल समतल शिला है, जो घनी लताओं और बेलों से आच्छादित है। चारों तरफ हरी भरी वनस्पति और विभिन्न प्रकार के पेड़ों से घिरी हुई यह शिला एक आश्रम का ही रूप धारण करती है, इसी शिला पर भगवान शिव, शंकराचार्य, गोरखनाथ आदि साधकों ने बैठकर अपनी साधनाएं सम्पन्न की थीं। कहा जाता है कि इस शिला पर एक बार में एक ही व्यक्ति साधना सम्पन्न कर सकता है, शिला के अलावा अन्य स्थान पर बैठने से उतनी सफलता नहीं मिल पाती जितनी कि प्राप्त होनी चाहिए।

जब कपाल स्वामी ने देखा कि कोई दूसरा योगी शिला पर बैठा हुआ है, तो उन्होंने अपने शिष्य से कहलाया कि वे किसी अन्य स्थान निवास कर लें, इस शिला को जल से और फिर मंत्रों से शुद्ध, पवित्र बनाना है, क्योंकि कल से कपाल स्वामी इस पर बैठ कर उच्चकोटि की साधना सम्पन्न करेंगे। कपाल स्वामी ने सोचा कि मेरा नाम लेना ही पर्याप्त होगा और जो सामने बैठा हुआ तांत्रिक है, वह अन्य स्थान पर चला जाएगा।

जब कपाल स्वामी ने यह बात शिला पर बैठे हुए असंज्ञानंद को सुनाई तो असंज्ञानंद ने नम्रता से जवाब दिया मैं स्वयं इस शिला पर बैठकर साधना सम्पन्न करने का विचार

रखता हूं, और आगे चालीस दिनों तक इस शिला पर ही साधना सम्पन्न करूंगा। इसलिए तुम अपने गुरु को जाकर कह दो कि वे किसी अन्य स्थान पर जाकर बैठ जाएं या जब मैं साधना सम्पन्न कर लूं तब वे इस शिला पर बैठकर साधना कर सकते हैं। पर इससे पूर्व किसी प्रकार से यह सम्भव नहीं है, कि मैं इस स्थान से हट जाऊं और अन्य किसी स्थान पर बैठकर साधना करूं।

असंज्ञानंद के मुंह से ऐसा उत्तर पाकर वह शिष्य हक्का-बक्का रह गया, उसने सोचा कि इस बैठे हुए व्यक्ति को शायद कपाल स्वामी की सिद्धियों के बारे में ज्ञान नहीं है, तभी ऐसी बात कह रहा है, यदि कपाल स्वामी क्रोधित हो गए तो इस व्यक्ति और इसके पास बैठे हुए शिष्यों का कहीं पता ही नहीं चलेगा।

इसलिए कपाल स्वामी के शिष्य ने एक बार फिर पूछा कि क्या मैं आपका यह उत्तर उन्हें सुना दूं, तो स्वामी असंज्ञानंद व्यंग से मुस्करा दिए और बोले- 'जाकर वही कह दे जो मैंने कहा है।'

शिष्य ने वापस आकर कपाल स्वामी को वे वाक्य ज्यों के त्यों सुना दिए, जो असंज्ञानंद ने कहे थे, सुन कर कपाल स्वामी की तयोरियां चढ़ गईं, गुस्से से होंठ फड़फड़ाने लगे, परंतु फिर भी अपने क्रोध को जबरदस्ती नियन्त्रित करते हुए अपने

प्रधान शिष्य को कहा - “तू जाकर उस मूर्ख को भली प्रकार समझा दे कि जिसने यह समाचार कहलवाया है, वह ऐरा गैरा नहीं अपितु **कपाल स्वामी** है, और जिसके चढ़े हुए तेवर देखकर प्रकृति भी एक क्षण के लिए रुक कर सोचने लगती है, मैं उसे केवल तीन घण्टे को समय देता हूँ, कि इस अवधि में वह इस शिला को खाली कर अन्यत्र चला जाए, अन्यथा इसके बाद जो कुछ भी घटित होगा, उसकी जिम्मेवारी उस पर होगी, मैं नहीं चाहता कि मेरे हाथों से किसी और योगी की मृत्यु हो जाए।”

कपाल स्वामी का प्रधान शिष्य विरूचि अपने गुरु का संदेश लेकर वहां गया जहां **स्वामी असंज्ञानंद** बैठे हुए थे, और कहा - “आपको शायद पता नहीं है, मैं **विश्व प्रसिद्ध दुर्वासा के साक्षात् अवतार कपाल स्वामी** का शिष्य हूँ और वे इसी सप्तमुण्डी शिला पर बैठकर विश्व की सर्वोच्च साधना सम्पन्न करना चाहते हैं, मैं आपको नहीं जानता कि आप कौन हैं, परन्तु इतना कह देता हूँ, कि यदि आपके व्यवहार से **कपाल स्वामी** क्रोधित हो गए तो आपका और आपके शिष्यों का सर्वनाश निश्चित है, उन्होंने आपको कहलया है, कि आप तीन घंटे के भीतर-भीतर इस सप्तमुण्डी आश्रम को खाली कर दें, जिससे कि वे साधना प्रारम्भ कर सकें, तीन घण्टे के बाद जो कुछ भी घटित होगा उसकी पूरी-पूरी जिम्मेवारी आपकी रहेगी।”

सुनकर **असंज्ञानंद** जोरों से अट्टहास कर उठे, बोले- “तू अभी छोकरा है, और तेरा गुरु **कपाल स्वामी** मेरे सामने बच्चा ही है, उसे जाकर कह दे कि **असंज्ञानंद** को आज्ञा देने वाला न तो अभी तक पृथ्वी पर पैदा हुआ है, और न आने वाले वर्षों में कोई पैदा होगा ही।”

“मैं साधना प्रारम्भ करने के अवसर पर लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहता, उसको जाकर कह दे, कि मैं चालीस दिन की साधना सम्पन्न करने के लिए कटिबद्ध हूँ,” और यह कहते-कहते उन्होंने हाथ के झटके से उसे वापस जाने के लिए कह दिया।

इतनी बात तो **कपाल स्वामी** के लिए असह्य सी थी, कोई उनकी बात को काट दे या उनका विरोध कर दे, यह उनके लिए मृत्यु तुल्य था, वे उसी क्षण अपने स्थान से उठ खड़े हुए और गोरखनाथ मुण्डी अर्थात् सप्त मुण्डी आश्रम पर जा धमके, जहां **असंज्ञानंद**, सप्त मुण्डी शिला पर अपने शिष्यों के बीच बैठे हुए थे, आते ही बोले-“तू शायद यह नहीं जानता कि मैं **कपाल स्वामी** हूँ और साधनाओं के बल पर पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करने की सामर्थ्य रखता हूँ, मैं एक गोपनीय साधना सम्पन्न करने के लिए आया हूँ, और आज प्रातः ही मैंने मां काली के विग्रह का रक्ताभिषेक किया है, अच्छा है तुम इस स्थान से हट जाओ, इस प्रकार की छिछोरी बातें तुम्हारे मुंह से अच्छी

नहीं लगती।”

असंज्ञानंद ने देखा सामने एक विचित्र व्यक्तित्व लिए साधु खड़ा है, काला रंग, लम्बा चौड़ा हाथी की तरह शरीर, बड़ा सा सिर और ललाट के मध्य में त्रिशूल के आकार का तिलक लगाए हुए। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह जो सामने कपाल स्वामी के नाम से तांत्रिक खड़ा है, अवश्य ही बहुत कुछ जानता होगा और जिस प्रकार से इसके तेवर हैं, उसके अनुसार यह क्रोध में आकर कुछ भी कर सकता है, परंतु इस प्रकार से घुटने टेक देना असंज्ञानंद के जीवन में सम्भव ही नहीं था, उसी चुनौती की मुख मुद्रा में उन्होंने जवाब दिया कि “तुम कपाल स्वामी हो, ऐसा तुम्हारे शिष्य से पता चला है, परंतु तुम जैसे सैकड़ों कपाल स्वामी को मैं अपने जेब में लिए घूमता हूं, तुमने अंगूठे के रक्त से काली का स्तवन अर्चन किया है, परंतु तुम्हारी बलि दी जानी बाकी है, और यदि तुम अपने आप में नियंत्रित नहीं रहे तो ऐसा क्षण भी आ सकता है, कि जबकि तुम्हारा भक्ष्य मां काली स्वीकार करे।”

कपाल स्वामी का सारा शरीर अंगारे की तरह लाल हो गया, काला शरीर तो था ही, क्रोध के तेज में वह और भयानक हो उठा, उसी समय वहीं छड़े-छड़े ही कपाल स्वामी ने हवा में हाथ लहराया और कुछ काली भिर्च तथा पीली सरसों के दाने शून्य में से प्राप्त किए और

तीव्र मारण प्रयोग पढ़ते हुए वे दाने हवा में उछाल दिए।

हवा में उन दानों का उछालना था कि मारक मंत्र के प्रभाव से एक-एक दाना बन्दूक की गोली की तरह तीव्र प्रभावयुक्त बन गया और वे सभी दाने-असंज्ञानंद के सीने से जा टकराये। यदि कोई दूसरा सामान्य सा तांत्रिक होता तो निश्चय ही उसी क्षण उसकी मृत्यु निश्चित थी, कोई ताकत उसको बचा नहीं सकती थी, परंतु असंज्ञानंद ने उस वार को झेल लिया और पलट कर बोले - “मैं असंज्ञानंद, तुम्हें फिर सावधान करता हूं कि इस प्रकार का कृत्य तुम्हारे लिए उचित नहीं है, यदि मैंने पलट कर वार किया तो तुम्हारे शरीर के चिथड़े-चिथड़े होकर हवा में उड़ जायेंगे, और तुम्हारा कोई आस्तित्व ही नहीं रहेगा।”

परंतु कपाल स्वामी कब मानने वाले थे, उन्होंने कृत्या प्रयोग करने का निश्चय किया, यदि मारण प्रयोग से कोई जानकार तांत्रिक नहीं मरे, तो फिर कृत्या के प्रयोग से तो सर्वनाश निश्चित है।

असंज्ञानंद समझ गए कि यह सामने खड़ा हुआ तांत्रिक अपने मंत्र - मद में पागल हो रहा है, और यदि समय रहते इसे नहीं रोका गया तो यह कुछ भी कर सकता है, तंत्र अनुकूलता के लिए हैं, प्रहार और दुष्टता के लिए नहीं। यदि कोई नीचता और दुष्टता पर ही उतर आये तो उसको अक्ल

देना भी शास्त्र मर्यादा के अनुकूल है।

ऐसा मन में सोचकर असंज्ञानंद विचलित हो गए, उसने देखा कि सामने कपाल स्वामी कृत्या मंत्र प्रयोग दोहरा रहे हैं, और किसी भी स्थिति को पैदा करने के लिए आमादा हैं, देखकर असंज्ञानंद मन ही मन क्रोध से अभिभूत हो गए, दुष्ट को जब तक दुष्टता का अहसास नहीं कराया जाए तब तक वह अनुकूल और नियंत्रित नहीं होता, ऐसा सोचकर असंज्ञानंद उसी शिला पर उठ खड़े हुए और गरज कर बोले- “मूर्ख कपाल, मैंने अभी तक अपने आपको नियंत्रित किया है, पर अब तू अपने सर्वनाश पर ही तुल गया है, तो मैं तुझे इसका मजा चखा देता हूँ”- और ऐसा कहते-कहते उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिए।

कपाल स्वामी ने देखा कि असंज्ञानंद उठ खड़ा हुआ है, और निश्चय ही वह मेरी कृत्या प्रयोग के जबाब में कोई कृत्या का प्रयोग ही करेगा इसीलिए जितना जल्दी हो सके पहले वार कर लेना चाहिए, जिससे कि सामने वाले शत्रु को सोचने या प्रहार करने का अवसर नहीं मिले।

असंज्ञानंद कृत्या के उच्च प्रयोग-फेत्कारिणी कृत्या प्रयोग से संबंधित मंत्र उच्चरित करने लगे, उनके दोनों हाथों में लौंग आ गए थे, और उन लौंगों के माध्यम से ही यह प्रयोग सम्पन्न होना था, मंत्र के शब्द सुन सारे शिष्य जो उनके पास

खड़े थे, भयभीत और विचलित हो गए। फेत्कारिणी प्रयोग तो अत्यन्त तीक्ष्ण और तीव्र होता है, इस प्रयोग से तो सर्वनाश निश्चित है, मगर जब असंज्ञानंद जी ने प्रयोग प्रारम्भ ही कर दिया है, तो उन्हें अब रोक ही कौन सकता है, पास खड़े शिष्य देख रहे थे, कि क्रोध के मारे असंज्ञानंद लाल सुर्ख हो गए हैं, और ऐसा लग रहा है कि वे स्वयं साक्षात् यमराज के अवतार हों।

कपाल स्वामी ने कृत्या मंत्र सम्पन्न किया और अपने हाथों में लिए हुए दाने हवा में उछाल दिए, पर तभी असंज्ञानंद ने भी फेत्कारिणी कृत्या को प्रयोग सम्पन्न कर लिया था, और प्रत्युत्तर में ज्यों ही लौंग हवा में उछालीं कि एक भयानक विस्फोट हुआ और जहां कपाल स्वामी खड़े थे, वहां पर परमाणु बम सा विस्फोट हो गया, चारों तरफ चिनगारियां फूट रही थीं। और ऐसा लग रहा था, जैसे सैकड़ों बम एक साथ फट गए हों। सामने तीव्र रोशनी और आग के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, जहां पर कपाल स्वामी खड़े थे, वहां पर कुछ भी स्पष्ट नहीं था, ऐसा लग रहा था, जैसे पृथ्वी और दिशाएं उस प्रहार से थर्रा उठी हैं, पशु-पक्षी क्रंदन कर उठे। जिस स्थान पर कपाल स्वामी और शिष्य खड़े थे, वह भूमि अग्नि से लाल सुर्ख होकर काली हो गयी थी और आसपास की सारी चट्टानें रेत के कणों में परिवर्तित हो गई थीं, जब आधे घण्टे बाद उस स्थान को

देखना संभव हुआ तो वहां न कपाल स्वामी थे, और न उनके शिष्य ही, शायद कृत्या प्रयोग की तीव्र अग्नि में जल कर वे खाक हो गये या उनके शरीर टुकड़े-टुकड़े होकर चारों तरफ बिखर गए।

जो कुछ घटित हुआ वह अपने आप में अलौकिक और रोमांचकारी था, उस प्रयोग के प्रभाव से पृथ्वी पर जो कंपन हुआ उसका अहसास २०-२० मील दूर गांवों के निवासियों तक को हुआ, ऐसा लगा जैसे कोई भूकम्प आ गया हो।

लगभग तीन चार घण्टे बाद स्थिति शांत हुई, तब तक असंज्ञानंद उसी चट्टान पर उसी मुद्रा में अडिग खड़े रहे, काफी समय बाद वे उस शिला से उतरे और मां काली के मंदिर में जाकर उनके चरणों में लिपट गए।

आज भी इस रोमांचकारी घटना के सैकड़ों लोग साक्षी हैं। उस क्षण की याद कर आज भी वहां के बड़े-बूढ़े थर्रा उठते हैं, उस दृश्य को स्मरण कर आज भी उन प्रत्यक्षदर्शी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और उस सप्तमुण्डी शिला के सामने ही आज भी पृथ्वी का वह भूभाग जला हुआ दिखाई देता है, जहां पर कपाल स्वामी और उसके शिष्य खड़े थे।

०००००

इक्कीस वर्षीया भैरवी

हीनू

जिसके पास दुर्लभ तंत्र हैं

वर्तमान काल “तंत्र काल” कहलाता

है, समय का चक्र बराबर घूमता रहता है, और उसी प्रकार से युग परिवर्तन होता रहता है, वर्षों पहले पूरे भारतवर्ष में तंत्र का बोलबाला था और तांत्रिकों को भारतवर्ष में अत्यन्त ही सम्मानीय रूप में देखा जाता था, गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ, योगी भैरवानंद, स्वामी औघड़ानंद आदि को आज भी हम सम्मानीय दृष्टि से देखते हैं, जिन्होंने भारत की प्राचीन तंत्र विद्या को जीवित रखा और हमारे पूर्वजों की थाती को सुरक्षित रूप से हमें प्रदान कर के गए।

पर बाद में कुछ तो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति हम पर हावी हो गई और इन चीजों को ढकोसला तथा पाखण्ड माना जाने लगा, और फिर कुछ ऐसे पाखण्डी और ढोंगी तांत्रिक

भी भारतवर्ष में चारों तरफ फैल गए जिन्होंने देह - सुख को तंत्र मान लिया, लम्बी लम्बी जटाएं, विभिन्न वेशभूषा और और ऊटपटांग कार्यों से जनता का विश्वास इन पर से हटने लगा, और तांत्रिक शब्द अपने आप में घटिया, डरावना, और घृणित बन गया।

पर फिर अब युग परिवर्तन हुआ है, भारत की जन चेतना में तांत्रिकों के प्रति आस्था पैदा हुई है, भारतीय जन मानस ने यह समझा है कि भारतीय तंत्र तो अपने आप में सही है, उचित है और प्रामाणिक है, परंतु कुछ भ्रष्ट तांत्रिकों के हाथों में यह विद्या चली जाने से बदनाम हो गयी है। अब उन्होंने पुनः तंत्र की ओर अपना आकर्षण दिखाया है, उन्होंने तंत्र साधनाएं सम्पन्न की हैं। **ये भारतीय किसी मठ या मंदिर के चक्कर में नहीं पड़े, ये किसी औघड़ या बाबाओं के शब्द जाल में नहीं उलझे** इन्होंने कोई तंत्र की दीक्षा ली, और इस बात को समझने की कोशिश की, कि क्या भारतीय तंत्र सही और प्रामाणिक है, क्या हमारे पूर्वजों ने जो विद्या भारत में प्रस्तुत की थी, वह प्रामाणिक है और क्या उन विद्याओं को जनसाधारण समझ सकता है?

और इसी भावना के फलस्वरूप उन्होंने कुछ क्रियाएं साधनाएं प्रारम्भ कीं। न तो वह श्मशान में गए, न उन्होंने मांस

और मदिरा का सेवन किया, और न अपने गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार का व्यतिक्रम आने दिया, उनका अपना गृहस्थ जीवन सुचारू रूप से चलता रहा, और साथ ही साथ अपना व्यापार या नौकरी करते हुए इन साधनाओं की ओर प्रवृत्त हुए तथा अपने घर में ही मामूली उपकरणों के माध्यम से मंत्र जप एवं साधनाएं सम्पन्न कीं, और इसके माध्यम में उन्होंने आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किए।

इन सब के करने से उनका तांत्रिक बनने का कोई स्वप्न नहीं था वे तो अपने समस्याओं से ग्रस्त थे और **इन समस्याओं का निराकरण विज्ञान के पास नहीं था**। वे मानसिक रूप से परेशान थे, अपने पुत्र के व्यवहार से दुखी थे, पुत्री के विवाह में विलम्ब होने से परेशान थे, पति-पत्नी के मतभेद से चिन्तित थे और इनका उत्तर न तो विज्ञान के पास था और न अध्यात्म के पास। इनका उत्तर तो तंत्र के द्वारा ही सम्पन्न हो सकता था और उन्होंने इससे संबंधित मंत्र जप करना शुरू किया और उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि वे अपनी स्वयं की समस्याएं स्वयं हल कर सकते हैं। इसके लिए न तो पाखण्डी साधुओं के चक्कर में पड़ने की जरूरत है, और न मठों, आश्रमों पर माथा रगड़ने की आवश्यकता है, और इसीलिए जन साधारण में इसके प्रति उत्सुकता और चेतना प्रारम्भ हुई सामान्य और मध्यम स्तर के व्यक्ति ही नहीं अपितु उच्च स्तर

के प्रबुद्ध व्यक्ति भी इन साधनाओं में रुचि लेने लगे, अपने आप को भारतीय और तांत्रिक कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे, उनके मन से हीन भावना दूर हो गई और वे पहले से ज्यादा सुखी, पहले ज्यादा सफल और पहले से ज्यादा सम्पन्न हो सके।

ऐसी स्थिति में कुछ जिज्ञासु साधकों ने आगे बढ़कर ऐसे व्यक्तियों की खोज प्रारम्भ की जो अखबारों में चर्चित तो नहीं थे, जो आश्रमों के महंत और मठाधीश तो नहीं थे, परंतु जो सही अर्थों में साधक थे और उनके पास जाकर उन्होंने उन साधनाओं को सीखने की कोशिश की जो उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके, जो उनके जीवन की कठिनाइयों में मार्ग प्रस्तुत कर सके, जो उनकी बाधाओं और विपत्तियों का निराकरण कर सके।

और मैंने देखा कि इस मामले में स्त्रियां आगे रहीं, प्रकृति ने हठ और स्वाभिमान का विशेष गुण स्त्रियों को दिया है जब वे किसी बात का निश्चय कर लेती हैं तो उसे पूरा करके ही छोड़ती हैं। तंत्र के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने जब भाग लेना शुरू किया तो पिछले कुछ ही वर्षों में कई स्त्रियों के नाम उभर कर सामने आए, जो अपने आप में साधना के क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रौढ़ या वृद्धा स्त्री ही साधना में सफलता प्राप्त करे, साधना के लिए न तो किसी वर्ग, जाति और न आयु का बन्धन है। कोई भी स्त्री या पुरुष

साधना सम्पन्न कर सकता है। इस में तरुणियों ने भी रुचि ली, और जब उन्होंने साधनाएं सम्पन्न कीं, उनके द्वारा चमत्कार दिखाए जाने लगे तो प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिवादी और महत्वपूर्ण व्यक्ति भी साहस करने लगे कि वास्तव में तंत्र पुरुषों की ही बपौती नहीं है अपितु स्त्रियां भी साधना में सफलता पा सकती हैं। ऐसी ही साधिकाओं में एक नाम उछल कर सामने आया है, जिसे हीनू कहते हैं।

मैं कतिपय कारणों से स्पष्ट नहीं कर सकता कि उसका पूरा नाम क्या है, वह किस की शिष्या है, उसने ये विद्याएं कहां से सीखीं पर विभिन्न समाचार माध्यमों में जम कर उसकी प्रशंसा हुई है। वैज्ञानिकों ने उसका परीक्षण किया है, उसके चमत्कारों को देखकर उन लोगों ने दांतों तले उंगली दबाई है और वे यह मानने के लिए बाध्य हुए हैं कि भारतीय तंत्र अपने आप में समृद्ध और जीवित है।

मनाली, हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जहां हजारों सैलानी घूमने जाते हैं, यहीं से एक सड़क रोहतांग दर्रे की ओर जाती है, जो व्यास गुफा के पास से होकर आगे की ओर जाती है, व्यास मंदिर से इसी सड़क पर लगभग १५ मील आगे, एक महत्वपूर्ण आश्रम है, जिसमें दो तीन वृद्ध स्वामी रहते हैं और उसके पास में ही यह हीनू नाम की तरुणी अपने

पिता और भाई के साथ अत्यन्त सामान्य तरीके से रहती है।

पर यह उच्च कोटि की तांत्रिका है, शायद पूर्व जन्म में भी यह कोई महत्वपूर्ण तांत्रिका रही है। यों भी हिमाचल में तंत्र अभी तक जीवित है, और कई स्थान तो ऐसे हैं जहां आज भी विज्ञान उनके चमत्कारों को देख कर आश्चर्यचकित रह जाता है।

पिछली यात्रा में मैंने इस हीनू को देखा, तो मुझे उसका पूर्व जन्म स्मरण हो आया और मैंने उसके यहां लगभग दो घण्टे बिताए, उसको भी कुछ ऐसा आभास हुआ कि पूर्व जन्म में इस व्यक्तित्व से किसी न किसी रूप में संबंध रहा है।

मेरे साथ दस बारह सन्यासियों और गृहस्थ शिष्यों की टोली थी और उसने मेरे कहने पर ऐसे कई तांत्रिक कार्य पलभर में सम्पन्न कर दिखाए जो अपने आप में आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं, ये ऐसे चमत्कार हैं, जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता। उसने कुछ ही पलों में सौ-सौ के नोटों की वर्षा कर दी और मेरे साथ जो गृहस्थ शिष्य **हरीलाल, कृपा शंकर, भिवंडी राम, रमेश डी० पटेल** थे उनके पास ये नोट आज भी रखे हुए हैं। भूतों के द्वारा उसने कई कठिन और असंभव

कार्य पल भर में करके दिखा दिए। जब रमेश ने कहा कि तुम ऐसी ही तांत्रिका हो तो मेरे घर में एक बक्सा पड़ा है वह ला कर दिखाओ, तो मैं तुम्हें जानूं, और **हीनू** ने मात्र दो मिनट में ही वह बक्सा रमेश के सामने रख दिया और उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। यही नहीं अपितु जब मैंने कहा '**हीनू**' तुम्हें जमीन पर नहीं अपितु जमीन से छः फीट ऊपर शून्य में ही आसन लगाना है, और साधना करनी है, तो उसने मेरे सामने ही शरीर स्थित सभी चक्रों को जाग्रत किया और अचानक वह जमीन से ऊपर उठ गई, हवा में ही उसने पद्मासन लगाया और ध्यानस्थ हो गई।

तीन चार सन्यासी शिष्यों ने उसके नीचे झुक कर आ-जा कर देखा तो वास्तव में ही शून्य में स्थिर थी, एक दो गृहस्थ शिष्यों ने तो उसके इस प्रकार के फोटो भी लिए।

उसने कहा मैंने यह साधनाएं कामाक्षा मंदिर में और उसके पास श्मशान में रहकर सम्पन्न की हैं, मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य तंत्र को सम्पूर्णता के साथ समझना है, सीखना है और आज के इस विज्ञान के सामने चुनौती के साथ खड़े हो कर दिखा देना है कि तंत्र के माध्यम से धनाढ्य और सम्पन्न बना जा सकता

है, किसी भी प्रकार के कार्यों को सम्पन्न किया जा सकता है और इसके माध्यम से विज्ञान को चुनौती दी जा सकती है।

आज भी कोई व्यक्ति उस स्थान पर जाकर हीनू से मिल सकता है, और इन आश्चर्यों को, तंत्र के इन अद्भुत चमत्कारों को, भारत की गौरवशाली इस प्राचीन विद्या को अपनी आंखों से देख सकता है, समझ सकता है और अपनी कसौटी पर परख सकता है।

वास्तव में ही भारत को अपनी पूर्वजों पर, तंत्र पर और हीनू जैसी साधिकाओं पर गर्व है।

०००००

जीवन को निष्कण्टक बनाने का रहस्य

ये छह मांत्रोक्त दीक्षाएं

पूज्यपाद गुरुदेव के वरद हस्त तले

१. गुरु दीक्षा :

प्रारम्भिक एवं आवश्यक दीक्षा, प्रत्येक साधना की नींव।

२. ज्ञान दीक्षा : जन्म-जन्मांतरी के कर्मों को काटने की दीक्षा। उच्च बोधि की दीक्षाओं के लिए प्रथम चरण।

३. धन्वन्तरी दीक्षा : जिससे शरीर रोग रहित और बलवान बन सके। जीवन व साधनाओं में सफलता के लिए आवश्यक।

४. महालक्ष्मी दीक्षा : जीवन

में आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ आवश्यक है भौतिक समृद्धता, इसी का उपाय है यह दीक्षा

५. शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी

जागरण : लम्बी साधनाओं की अपेक्षा कुण्डलिनी जागरण की सहज पद्धति। समर्थ व सक्षम पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा।

६. भुवनेश्वरी दीक्षा : केवल मात्र एक साधना, एक दीक्षा से भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर लेने का अवसर।

सम्पर्क

गुरुग्राम,

३०६- कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन: ०११-७९८२२४८,

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,

हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर(राज.) ३४२००१,
फोन: ०२६१-३२२०६

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

. साधना ज्ञान में
रोचकता की

त्रिवेणी . अनूठी साधनाएं

. आकस्मिक धन प्राप्ति

. सम्मोहन . रोग निवारण

. ऋण मुक्ति . पौरुष प्राप्ति

. आयुर्वेद . ज्योतिष द्वारा

समस्या निवारण



साथ ही प्रत्येक
वार्षिक सदस्य
को उपहार में

देते हैं कोई एक दुर्लभ

यंत्र . . सर्वथा निःशुल्क

उसके घर में या व्यापार

स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- डाक

व्यय १८/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर (रांज.), फोन- ०२६१ ३२२०३